तपेदिक भारत - 2014

सचिन कुमार जैन

'तपेदिक भारत' लेख का यह शीर्षक शायद आपको अटपटा लग सकता है, परंतु देश में तपेदिक या टीबी की स्थिति पर केंद्र सरकार द्वारा हर साल जारी की जाने वाली रिपोर्ट का शीर्षक ही टीबी इंडिया 2014 है। 'भारत में टीबी की स्थिति' और 'तपेदिक भारत': वास्तव में शीर्षक को व्यक्त करने के ये दो तरीके विषय के अर्थ और गंभीरता को पूरी तरह से बदल देते हैं।

जब हम वास्तव में टीबी की स्थिति और उसके फैलाव पर नज़र डालते हैं, तो हमें इस सरकारी रिपोर्ट का शीर्षक बिलकुल माकूल नज़र आता है। तपेदिक अब केवल गरीबी से जुड़ी हुई बीमारी नहीं रह गई है। अब यह खराब जीवन शैली और नए किस्म के विकास से पनपने वाली बीमारी का रूप ले चुकी है। भारत में लगभग 33 लाख लोग किसी न किसी तरह की टीबी से ग्रस्त हैं और हर साल 2.76 लाख लोगों की मृत्यु होती है। विश्व में हर साल 94 लाख टीबी प्रकरण पहचाने जाते हैं, इनमें से लगभग 20 प्रतिशत (19.8 लाख) भारत से होते हैं। नए प्रकरणों में 2 से 3 प्रतिशत पर विभिन्न औषधियों का प्रभाव ही नहीं होता है। जब लोग बीच में उपचार छोड़ देते हैं तो यह संख्या बढ़कर 14 से 17 प्रतिशत तक पहुंच जाती है।

सुप्त या छिपी हुई टीबी - टीबी भी किसी परमाणु बम से कम नहीं है। आम तौर पर हम उनकी बात करते हैं जो इससे संक्रमित हो चुके हैं और जिन पर इसके लक्षण दिख रहे हैं परन्तु विश्व स्वास्थ्य संगठन ने बताया है कि दुनिया में एक तिहाई जनसंख्या या 2 अरब लोगों में टीबी के कीटाणु मौजूद हैं। यदि व्यक्ति की रोग प्रतिरोधक क्षमता मज़बूत रही तो ये कीटाणु दबे रहते हैं और टीबी के लक्षण नहीं उभरते। संगठन का मानना है कि इनमें से 2 करोड़ लोगों में कभी भी जीवाणु सक्रिय होकर तपेदिक के लक्षण पैदा कर सकता है।

भारत सरकार की रिपोर्ट टीबी इंडिया 2012 के मुताबिक भारत में 40 फीसदी जनसंख्या में *मायकोबैक्टीरियम ट्यूबरक्लोसिस* (टीबी का जीवाणु) निष्क्रिय रूप में मौजूद है। इस छिपे और निष्क्रिय टीबी जीवाणु को सक्रिय करने में कुपोषण एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कम वज़न के 6.5 करोड़ बच्चों वाले भारत के लिए यह सचमुच एक बड़ा खतरा है। नियमित रूप से पौष्टिक भोजन न मिलने के कारण, जब प्रतिरोधक क्षमता कमज़ोर हो जाती है तो यह जीवाणु सक्रिय हो जाता है। छोटे बच्चों में इसके सक्रिय होने की बहुत संभावना होती है। ऐसे में ज़रूरी हो जाता है कि 6 साल से कम उम्र के बच्चों के लिए इस बीमारी के नज़रिए से ठोस कार्ययोजना बने और समुदाय को निगरानी में शामिल किया जाए।

वर्ष 1990 से 2012 के बीच के सालों में तपेदिक से प्रभावितों की पहचान और उपचार के व्यापक प्रयासों से स्थिति में बहुत बदलाव आया हुआ सा लगता है। यह माना जाता है कि 1990 में हर एक लाख लोगों में से 216 लोग तपेदिक की चपेट में थे। वर्ष 2012 में यह संख्या घट कर 176 पर आ गई है। इन सालों में टीबी के कारण एक साल में मरने वालों की संख्या 3.3 लाख से घट कर 2.7 लाख के आसपास आ गई है। अब सवाल यह है कि क्या हमने वास्तव में इस पर नियंत्रण हासिल कर लिया है? उत्तर यह है कि नहीं!

विश्व स्वास्थ्य संगठन का कहना है कि जांचों और उपचार से सक्रिय रूप से टीबी प्रभावित लोगों की संख्या में कमी आई है परंतु सुप्त टीबी को सक्रिय करने वाले कारकों पर हम अभी नियंत्रण नहीं पा सके हैं। गौरतलब है कि देश के 49 करोड़ लोगों में टीबी का बैक्टीरिया मौजूद है, जो चुपचाप पड़ा हुआ है और प्रतिरोधक क्षमता कमज़ोर पड़ते ही वह बीमारी पैदा कर सकता है। छिपे हुए टीबी बैक्टीरिया को ताकतवर बनाने वाले कारक हैं - चिकित्सकीय (जैसे एचआईवी, मधुमेह, तम्बाकू उपयोग, कुपोषण, सिलिकोसिस,

कैंसर आदि), पर्यावरणीय (घर के भीतर का वायु प्रदूषण, साफ हवा की आवाजाही न होना आदि) और सामाजिक-आर्थिक (भीड़भाड़, शहरीकरण, पलायन, गरीबी आदि)। विश्व स्वास्थ्य संगठन मानता है कि भारत में टीबी के व्यापक विस्तार और इन सभी कारकों के बीच के सम्बंधों पर काम नहीं हुआ है।

टीबी कुपोषण और मधुमेह - इसी बीच दुनिया में मधुमेह की बीमारी पर इंटरनेशनल डायबिटीज़ फेडरेशन के नए आंकड़े सामने आए हैं। दक्षिण भारत में हुए एक अध्ययन से पता चला है कि मधुमेह अपने आप में टीबी होने का एक स्वतंत्र कारण है। अध्ययन से पता चला है कि 14.8 प्रतिशत टीबी प्रभावित मधुमेह से भी ग्रस्त हैं, जबकि बलगम की जांच में टीबी के सकारात्मक लक्षण वाले 20.8 प्रतिशत व्यक्ति मधुमेह से पीड़ित हैं। स्वास्थ्य के सन्दर्भ में तो यह मान ही लिया गया है कि तेज़ शहरीकरण और आर्थिक विकास के कारण मधुमेह एक महामारी के रूप में बढ़ रहा है। भारत में अब 6.13 करोड़ लोग इस लाइलाज बीमारी की चपेट में हैं।

टीबी के फैलाव का सबसे बड़ा कारण होता है किसी संक्रमित व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को टीबी होना। इसकी पहचान और उपचार किया जा रहा है, परन्तु दूसरा बड़ा कारण है सुप्त टीबी का सक्रिय होना, जिसमें ज़रूरी नहीं कि किसी टीबी संक्रमित व्यक्ति से ही दूसरा व्यक्ति टीबी की चपेट में आए। *लैंसेट* श्रृंखला के एक शोध पर्चे में बताया गया है कि सुप्त बैक्टीरिया को जगाकर सक्रिय टीबी को बढ़ाने में दो अहम कारण हैं - एचआईवी और कुपोषण। यह अध्ययन बताता है कि कितनी जनसंख्या किस कारण से टीबी ग्रस्त हो सकती है - एचआईवी (16 प्रतिशत), कुपोषण (27 प्रतिशत), मधुमेह (10 प्रतिशत), शराब (13 प्रतिशत), धूम्रपान (21 प्रतिशत) और वायु प्रदूषण (22 प्रतिशत)। मतलब साफ है कि केवल जांच और इलाज से टीबी नहीं संभलेगी। इसके लिए हमें जीवन शैली और बेतरतीब विकास की नीतियों की भी समीक्षा करना होगी।

इसका बहुत सीधा जुड़ाव गरीबी और कामकाजी परिस्थितियों से है। लगातार पर्याप्त पौष्टिक भोजन न मिलने के कारण भी शरीर कमज़ोर हो जाता है और टीबी के जीवाणु अपना प्रभाव दिखलाते हैं। जब टीबी का बैक्टीरिया फेफड़ों की हवा प्रवाहित करने वाली कोशिकाओं में पहुंच जाता है, तब इसका प्रभाव शुरू हो जाता है। फिर यह खून के बहाव के साथ-साथ गुर्दे, दिमाग और हड्डियों तक पहुंच जाता है और उन्हें टीबी से प्रभावित करना शुरू कर देता है।

हालांकि भारत के टीकाकरण कार्यक्रम में टीबी की रोकथाम के लिए बीसीजी का टीका लगाने की व्यवस्था है, लेकिन इसके समुचित क्रियान्वयन को लेकर कई सवाल हैं। वर्ष 2007 में 87 प्रतिशत बच्चों को बीसीजी का टीका लगा था और तब से लेकर वर्ष 2013 तक के आंकड़े भी 87 प्रतिशत टीकाकरण का दावा कर रहे हैं। बहरहाल संयुक्त राष्ट्र संघ के जनसंख्या विभाग ने भी इन आंकड़ों पर सवाल उठाए हैं। शायद समस्या यह है कि देश में बीसीजी पर इतना अधिक विश्वास किया गया कि बच्चों में टीबी की जांच और उपचार को एक विषय के रूप में महत्व ही नहीं दिया गया।

हम सब आजकल अपनी ज़िन्दगी में चीज़ों को आर्थिक मानकों (मौद्रिक कीमत) के आधार पर तौलते हैं। टीबी इंडिया (2014) के मुताबिक इस बीमारी के कारण परिवार की 20 से 30 प्रतिशत आमदनी कम हो जाती है और देश को 1422 अरब रुपए का नुकसान होता है। जिस तरह के विकास के लिए भारत की सरकारें सरकारी संसाधनों का भरपूर निवेश कर रही हैं, उन्हें नीति बनाते समय यह दिखाई नहीं देता कि वास्तव में यह विकास लोगों से दोहरी कीमत वसूल करता है - आर्थिक असुरक्षा और मृत्यु। जब भी सरकार अगली बार देश में टीबी की स्थिति की समीक्षा करे, तब उसे यह भी आकलन करना चाहिए कि शहरीकरण, कुपोषण और वायु प्रदूषण के कारण होने वाले तपेदिक से कैसे निपटा जाएगा। केवल जांच केन्द्रों और मरीज़ों के उपचार की संख्या बता कर इस महामारी को छिपाया नहीं जाना चाहिए। ***(स्रोत फीचर्स)***